INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

प्राचीन भारतीय ज्ञान : एक खोज

(Ancient Indian knowledge: An Exploration)

अर्चना मौर्या
सहायक प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
आदर्श महिला महाविद्यालय,
भिवानी (हरियाणा)
E-mail: archuabhi90@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/05.2026-55533151/IRJHIS2605005

शोध सार :

प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में से एक है, जिसमें ज्ञान के विविध आयामों को समाहित किया। सिन्धु धाटी सभ्यता (2300–1750 ई0पू0) से लेकर गुप्तकाल (320–550 ई0) तक भारत ने वेद, उपनिषद, पुराण और संहिताओं के माध्यम से एक समृद्ध ज्ञान–कोष विकसित किया। प्राचीन भारतीय इतिहास में मानव सभ्यता के ज्ञान के विकास में दर्शन चिकित्सा विज्ञान और गणित जैसे क्षेत्रों में अमूल्य ज्ञान प्रदान किया। वैदिक काल से लेकर गुप्तकाल तक विशेष क्षेत्र में गुरू और शिष्य परम्परा के माध्यम से ज्ञान का विश्लेषण किया गया। वेदों से लेकर शुश्रुत संहिता तक यह ज्ञान मौखिक परम्परा, ग्रंथों को गुरु–शिष्य को ज्ञान प्रदान करता था। प्राचीन भारतीय ज्ञान की विशेषता मौखिक संप्रेषण (श्रुति) और लिखित संकलन (स्मृति) जो सदियों तक संरक्षित रहा। प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में चरक, सुश्रुत और वाग्मट् ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्यभट्ट और वराहमिहिर ने खगोल विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय गणित ने विश्व को दशमलव, शून्य और बीजगणित दिए। प्राचीन भारतीय का दार्शनिक ज्ञान षडदर्शन (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत) में निहित है। इस शोध का मुख्य उदेश्य आधुनिक संदर्भ में इस ज्ञान की प्रासंगिक स्थापित करना जो सतत् अनुसंधान को प्रेरणा देता है।

मुख्य शब्द : *वेद, दार्शनिक, परंपरा, उपनिषद, मीमांसा, दशमलव, चिकित्सा।*

प्रस्तावना :

प्राचीन भारत में ज्ञान अर्जित करने के लिए ऋषि–मुनियों ने वनों में जाकर कई वर्षों तक तप और आध्यात्म के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया। भारतीय परम्परा में ज्ञान प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने का मार्ग था। जबकि पश्चिमी सभ्यता में ज्ञान को अक्सर प्रकृति पर विजय पाने का साधन माना गया है। सिंधु सभ्यता से लेकर गुप्तकाल तक विभिन्न ऋषियों और वैज्ञानिकों ने किस तरह से प्रकृति के रहस्यों को समझा और सुलझाने का प्रयास किया। उनके द्वारा दिए गए ज्ञान का आज के आधुनिक युग में कितना प्रासंगिक है यह हम सभी को भलीभाँति पता है। प्राचीन भारत में ज्ञान केवल मस्ष्तिक की कसरत नहीं बल्कि वह विद्या थी वह जो मुक्त करती

थी। (सा विद्या या विमुम्तय)। भारत की ज्ञान विरासत केवल आध्यात्मिक या धार्मिक नहीं रही है, बल्कि इसमें तर्क, विज्ञान, गणित, चिकित्सा और खगोल का गहरा समावेश रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा के बहुआयामी स्वरुप का अन्वेषण करता है। 'ज्ञान' शब्द का अर्थ केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं बल्कि सत्य का साक्षात्कार करना था। प्राचीन भारत को 'विश्वगुरू' कहा जाता था। इसका मुख्य कारण यहाँ की समृद्ध ज्ञान परंपरा थी जो वेदों उपनिष्दों और विभिन्न शास्त्रों में निहित हैं। सिंधु सभ्यता से लेकर गुप्तकाल तक भारत ने दर्शन, गणित और विज्ञान में ऐसी ऊचाँइयों को छुआ जिससे पूरी दुनिया को प्रभावित किया।

वेदों और उपनिषदों में विज्ञान :

वेदों को केवल धार्मिक ग्रंथों के रुप में जाना जा सकता है लेकिन गहराई से अध्ययन करने पर इनमें खगोल विज्ञान और भौतिक के बीज मिलते है। ऋग्वेद में सृष्टि के उत्पत्ति के बारे में बताया गया है। अथर्ववेद में आयुर्वेद के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। जिससे रोगों के उपचार और औषधीय पौधों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। प्राचीन काल में ऋषि–मुनियों को इन सभी जड़ी–बूटियों के बारे में विस्तृत जानकारी होती थी। इन जड़ी–बूटियों के माध्यम से लोगों की बीमारियों को ठीक किया जाता था। उस समय सभी व्यक्तियों को अपने स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए इन सभी जड़ी–बूटियों का नियमित प्रयोग किया जाता था। वेदों की संख्या चार है ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। इन्हें अपौरुषेय कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि यह किसी मनुष्य के द्वारा नहीं बल्कि ऋषि–मुनियों के द्वारा गहन ध्यान में अनुभूत किया गया शाश्वत ज्ञान है। ऋग्वेद विश्व की प्राचीनतम ग्रंथ है। इनमें देवताओं की स्तुति के साथ–साथ सृष्टि की उत्पत्ति के गहरे रहस्य है। नासदीय सूक्त में बताया गया है कि सृष्टि से पहले न सत् था न असत् केवल अंधकार था। यह शून्यता से ब्रह्मण्ड के सृजन की वैज्ञानिक व्याख्या करता है। ऋग्वेद में सूर्य के सात रंगो (इंद्रधनुष) का वर्णन मिलता है। इसमें उल्लेख मिलता है कि चंद्रमा सूर्य के प्रकाश से चमकता है। ऋग्वेद में ऋतुओं के बारे में सटीक गणना मिलती है जैसे वर्षा और मास। यजुर्वेद में यज्ञों की विधियों के बारे में जानकारी मिलती हैं। इसमें ज्यामिति का गहरा ज्ञान छिपा है। यज्ञ के लिए वेदियाँ बनाई जाती थी। जिनका आकार बनाया जाता था। इनको बनाने के लिए 'शुल्ब सूत्रों' का प्रयोग होता था जो आज के रेखागणित का आधार है। वर्ग, आयत और वृत्त के क्षेत्रफल निकालने के सूत्र यही से आये थे। समवेद में स्वरों के उच्चारण और उनके प्रभाव का सूक्ष्म वर्णन है। आज का विज्ञान भी मानता है कि 'शब्द' एक ऊर्जा है। सामवेद के मंत्रों का विशिष्ट लय में उच्चारण शरीर के चक्रों और मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालता था।

आयुर्वेद और चिकित्सा पर शोध :

प्राचीन भारत में आचार्यों ने आयुर्वेद और प्राचीन भारत की चिकित्सा पद्वति पर विस्तृत शोध किये है। उस समय आयुर्वेद के माध्यम से चिकित्सा किया जाता था जैसे चरक संहिता (आचार्य चरक) ने आंतरिक चिकित्सा और पाचन तंत्र पर विस्तृत शोध किया। चरक ने बताया कि मानव शरीर वात, पित्त और कफ के संतुलन पर टिका है। यदि इनमें असंतुलन होता है तो व्यक्ति बीमार पड़ता है। उन्होंने पाचन की प्रक्रिया और जठराग्नि के महत्व के बारे में बताया। आचार्य सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का जनक कहा जाता है। सुश्रुत ने शल्य उपकरण, प्लास्टिक सर्जरी, मृत शरीर का विच्छेदन और जटिल ऑपरेशन जैसे मोतिया बिन्द, पथरी, टयूमर और हड्डियों के फ्रेक्चर को जोड़ने जैसी जटिल सर्जरी का विस्तृत विवरण दिया है। सुश्रुत संहिता में 121 प्रकार के शल्य उपकरणों

का वर्णन मिलता है। सर्जरी के दौरान दर्द कम करने के लिए वे विशेष औषधियों और मदिरा के प्रयोग का सुझाव देते थे ।

गणितीय विरासत :

प्राचीन भारतीय गणितज्ञों ने विश्व को वह आधार दिया जिसके बिना आधुनिक तकनीक की कल्पना भी करना असम्भव है। गुप्तकाल में ऐसे महान व्यक्ति हुए जिन्होंने गणित और खगोल के बारे में ज्ञान प्राप्त कर विस्तृत खोज किया। जैसे : आर्यभट्ट, वराहमिहिर, बह्मगुप्त और भास्कराचार्य विशेष महत्व रखते है। आर्यभट्ट का गणित के क्षेत्र में विशेष स्थान केवल इसलिए नहीं है कि उन्होंने सबसे पहले गणित–ज्योतिष की समस्याओं को उठाया बल्कि इसलिए भी है कि उनके द्वारा बताए गए बुनियादी गणित सिद्धांतों का आने वाली शताब्दियों के गणितज्ञों ने भी अनुकरण किया। यह उन्हीं के प्रयत्नों का परिणाम था कि ज्योतिष को गणित से अलग माना गया। उनका विश्वास था कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है तथा इसकी छाया चंद्रमा पर पड़ने के कारण ग्रहण पड़ता है। आर्यभट्ट के सिंद्धातों को भास्कर प्रथम (600 ई0) ने उनपर टीकाएं और स्वतंत्र ग्रंथ लिखकर विशेष ख्याति प्रदान की। ब्रह्मगुप्त ने ब्रह्म–सिद्धांत की रचना की। उन्होंने आर्यभट्ट, श्रीसेन, विष्णुचंद्र, भाट व प्रदुम्य के सिद्धांतों एवं प्रणालियों की आलोचना की है।

ज्योतिष :

वराहमिहिर पंचसिद्धान्तिका की रचना की। वह महत्वपूर्ण ज्योतिषी के रुप में इतना अधिक प्रशंसनीय नहीं है जितना ज्योतिष के इतिहासकार के रुप में। उन्होंने वृत्संहिता, वृहज्जातक, लधुजातक आदि की रचना की। उनका काल छठी शताब्दी के मध्य में माना जाता है। छठी शताब्दी में वाग्भट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ अष्टांग ह्दय की रचना की। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में आयुर्वेद का विद्वान और चिकित्सक धन्वंतरि रहता था। नवनीतकम नामक आयुर्वेद ग्रंथ की रचना भी इसी काल में हुई। पालकात्य नामक पशुचिकित्सक ने हस्त्यायुर्वेद नामक ग्रंथ की रचना की जो हाथियों के रोगों व चिकित्सा से संबंधित थी। भारतीय चिकित्सा–विषयक ज्ञान का प्रचार पश्चिम एशिया में हुआ और एक फारसी चिकित्सक भारतीय औषधिशास्त्र के अध्ययन के लिए छठी शताब्दी में भारत आया। शल्य शास्त्र का ज्ञान भी चिकित्सों को था।

परमाणु और भौतिक विज्ञान :

भौतिक और रसायन विज्ञान का भी अध्ययन हुआ। वैशेषिक शाखा ने अणु सिद्धांत का प्रतिपादन और प्रचार किया। बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन रसायन और धातुविज्ञान का विद्धान था। उसने यह प्रमाणित किया कि सोना, चाँदी, तांबा आदि खनिज पदार्थों के रासायनिक प्रयोग से रोगों का निवारण हो सकता था।

तकनीकी ज्ञान :

तकनीकी और विशेषीकृत ज्ञान श्रेणियों के हाथों में ही था शिल्पियों के बेटों को वंशानुगत व्यवसाय का प्रशिक्षण दिया जाता था। धातु संबंधी ज्ञान की अत्यधिक उन्नति हुई। इस काल का सर्वाधिक भव्य अवशेष दिल्ली का सुप्रसिद्ध लौह स्तंम्भ है जो मेहरौली में स्थित है।

निष्कर्ष :

प्राचीन भारतीय ज्ञान स्थिर नहीं था वह प्रवाह था। तुर्क शासकों और औपनिवेशिक शिक्षा पद्धति ने इस कड़ी को तोड़ दिया। आज जब दुनिया जलवायु परिवर्तन मानसिक तनाव और लाईलाज बीमारियों से जूझ रही

है। तब भारत का यह प्राचीन 'खजाना' समाधान की तरह दिखता है। हमें इस ज्ञान को केवल पूजा घर में नहीं, बल्कि प्रयोगशाला में ले जाने की जरुरत है।

Reference:

1. Altekar, A. S. (1944). *Education in Ancient India*. Nand Kishore & Bros.
2. Basham, A. L. (1954). *The Wonder That Was India*. Sidgwick & Jackson.
3. Bose, D. M., Sen, S. N., & Subbarayappa, B. V. (1971). *A Concise History of Science in India*. Indian National Science Academy.
4. Frawley, D. (2001). *Gods, Sages and Kings: Vedic Secrets of Ancient Civilization*. Lotus Press.
5. Joseph, G. G. (2010). *The Crest of the Peacock: Non-European Roots of Mathematics*. Princeton University Press.
6. Kautilya. (R. Shamasastry, Trans., 1915). *Arthashastra*. Government Press.
7. Saraswati, S. P. (1986). *Geometry in Ancient India*. Govindram Hasanand.
8. Sharma, P. V. (1992). *History of Medicine in India*. Indian National Science Academy.
9. Singh, Bal Ram. (2003). *Science and Technology in Ancient India*. Center for Indic Studies.
10. Zimmer, H. (1951). *Philosophies of India*. Princeton University Press.
11. Kak, Subhash. (2000). *The Astronomy of the Vedic Altar*. Aditya Prakashan.
12. Malhotra, Rajiv. (2011). *Being Different: An Indian Challenge to Western Universalism*. Harper Collins.
13. Kramrisch, Stella. (1946). *The Hindu Temple (Vol. 1 & 2)*. University of Calcutta.